भजन

तर्ज–श्याम तेरी बंसी पुकारे

निसबत का सिलसिला है, हमपे किया करम
खातिर हमारी अर्श से, उतरें है खुद खसम

1–हो गई भूल हमसे मांगा ये खेल तुमसे
पिया ने हमको रोका, तीन बार टोका
हमने फिर एक न मानी, माया पड़ी दिखानी
आकर के भूल गई, सुध नही अपने घर की
लौट के कहां जाना, कहां है मूल ठिकाना
लाखो किये यतन ....

2–लाखो है धर्म यहां पर, भटके हम यहां पर आकर
जर्रे जर्रे में समाया ,हमको नजर न आया
तड़पे हम याद में तेरी, बिछड़ी है आतम मेरी
होगा कब मिलन . . . . . .

3–दुखी न देख सके, देख के वो रह न सके
सतगुरू बन कर आये, जाम अर्श का लाये
पी के मदहोश हो गई, मैं न रही एक हो गई
तू ही तू है खसम . . . .

4–घर को अब ले के चलो, खत्म ये खेल करो
भर गया जी यहां से, दुख ही दुख है यहां पे
आवें सुख याद अर्श के, रूह मेरी नित तरसे
पहुंचेगें कब वतन . . .